Rev. Dr . Timothy C. Geoffrion,
Ph.D., D.D. Founder
Faith ,Hope, and Love Global Ministries

Essay by: Rev.Dr Timothy .C.Geoffrion
Translated to Hindi by: Pastor Arvind Deep

Topic Truth 4 Remember – Expect to share in Christ suffering .Expect to share his glory
मसीह के कष्टों में हिस्सेदारी की अपेक्षा। उनकी महिमा में साझा करने की उम्मीद है

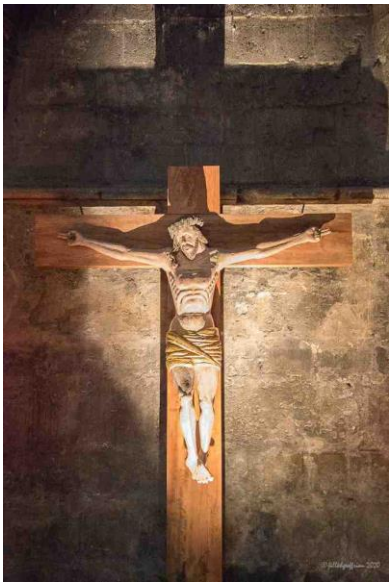

आप सभी प्रभु यीशु के सेवक विशवासी को जय मसीह की, एक महान प्रभु के दास ने कहा है, जितना हम परमेश्वर के वचन की संगती करते है, उतना हम अपने बारे मे यह जान पाते है, की मै मसीह मे कौन हूं। आप जितना अधिक परमेश्वर के बारे मे ज्ञान रखेंगे उतना अधिक आप शक्तिशाली बन पाएंगे,
परमेश्वर का वचन कहता है आपके और मेरे विषय मे
परंतु जो लोग परमेश्वर का ज्ञान रखेंगे, वे हियाव बांधकर बड़े काम करेंगे दानियेल ११:३२
परमेश्वर चाहता है कि उसके विषय मे आप ज्ञान रखें
आज के संदेश मे हम देखेंगे हमारा सहभागिता मसीह मे,
मसीह के कष्टों में हिस्सेदारी की अपेक्षा। उसके महिमा में साझा करने की उम्मीद है
पतरस के बात बात करने से यह प्रगट हो गया की वह मसीह यीशु के साथ था,
दुनिया भर में कई स्थानों पर, मसीही अपने विश्वास के लिए पीड़ित हैं। यह कई अलग-अलग रूपों में आता है, हल्के से तीव्र तक, सूक्ष्म से अति तक। सामाजिक सेटिंग में मसीहीयों को नियमित रूप से अस्वीकृति और महत्वहीन सोचकर नीचे रखा जाता है। कभी-कभी, वे अधिक गंभीर हमलों के शिकार भी

होते हैं, जैसे झूठे आरोप, घृणा, विरोध, शारीरिक शोषण, और कभी-कभी मारे भी जाते हैं। कोई भी इस तरह से पीड़ित नहीं होना चाहता है, लेकिन, एक ही समय में, मसीह की पीड़ाओं को साझा करना हर पीढ़ी में मसीही द्वारा एक विशेषाधिकार माना गया है। इसकी भी उम्मीद है।

अच्छी खबर यह है कि एक दिन मसीह के कष्टों को साझा करना भी हमारी महिमा का मार्ग है।

मसीह के कष्टों में हिस्सेदारी की अपेक्षा। उनकी महिमा में साझा करने की उम्मीद है। (रोमियों ८:१४-१८, २९-३० ; फिलि। २:५-८ लूका २२-४२-४४ इब्रानी ; ५:७ १२:१-२

परमेश्वर के संतान मसीह के दुःखो में हिस्सा लेते हैं

हमें कभी भी बाइबल में मसीह की पीड़ा को भुगतने या साझा करने की आज्ञा नहीं है। इसके बजाय, प्रेरित पौलुस इसके बारे में अधिक बात करता है जो उन लोगों के लिए एक अपेक्षित अनुभव के रूप में है जो ईमानदारी से यीशु का अनुसरण करते हैं। उदाहरण के लिए, रोम को लिखे अपने पत्र में, संत पौलुस ने लिखा:

उन सभी के लिए जो परमेश्वर की आत्मा के अगवाई में चलते हैं... परमेश्वर के संतान हैं। अब अगर हम संतान हैं, तो हम उत्तराधिकारी भी हैं - परमेश्वर के उत्तराधिकारी और मसीह के सह-वारिस, यदि वास्तव में हम उसके कष्टों को इस क्रम में साझा करते हैं , हम उसकी महिमा में भी साझा कर सकते हैं।

(रोमी ८:१४,१७ NIV)
और, फिलिप्पियों को लिखे अपने पत्र में, संत पौलुस यीशु को हमारे Role-Model, प्रेरणास्रोत के रूप में इंगित करता है। वह लिखता है:

५ जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।
६ जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।
७ वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।
८ और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।
९ इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।
१० कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।

(फिल्प २: ५-,,१० NRSV,)

हमें दुख की तलाश नहीं है, लेकिन हमें यीशु का अनुसरण करने के लिए कहा जाता है। उसके प्रति निष्ठा के साथ जब हम जीवन जीएंगे हमारे लिए दुख आएगा। क्यों? क्योंकि जब हम परमेश्वर को हाँ कहते हैं, तो अक्सर उसका मूल्य चुकाना होता है। जब हम प्रलोभन के लिए नहीं कहते हैं, तो हमें अधूरी इच्छाओं के साथ रहना पड़ सकता है ,या हम महसूस कर सकते हैं कि हम कुछ करना चाहते हैं या अनुभव कर रहे हैं। जब हम पवित्रता और ईश्वरत्व का चयन करते हैं, तो हम अपने जीवन मे बहुत कुछ खो देते है, जो चंद समय के लिये (झूठे) आराम लाते हैं। जब हम खुद को मसीह और सुसमाचार की सेवा के लिए समर्पित करते हैं, तो हमें और हमारे परिवारों को अक्सर बलिदान करना पड़ता है। जब हम अविश्वासियों के बीच मसीह के प्रति अपने विश्वास को दृढ़ रखते हैं, तो हमें उनकी शत्रुता, अस्वीकृति, नीचापन पर या उससे भी बदतर हो सकता है।

यीशु जानता था कि परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण का मूल्य बहुत अधिक है। इसलिए, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि शिष्यत्व का क्या अर्थ है:

यदि कोई भी मेरे अनुयायी बनना चाहते हैं, तो उन्हें खुद से इनकार करे और अपना क्रूस प्रतिदिन उठाएं और मेरा अनुसरण करें। जो लोग अपने जीवन को बचाना चाहते हैं, वे इसे खो देंगे, और जो लोग मेरी खातिर अपना जीवन खो देंगे, और सुसमाचार की खातिर इसे बचाएंगे।
(लुका ९:२३-२४ NRSV)

हम अब यरूशलेम के लिए सड़क पर यीशु का अनुसरण नहीं कर सकते हैं, जैसा कि उसके मूल शिष्यों ने किया था; और हम में से कोई भी उसके साथ क्रूस पर नहीं मर सकता। यीशु उसके लिए नहीं पूछ रहा था। वह हमें उस मार्ग पर चलने के लिए कह रहा था जो जीवन की ओर ले जाता है। वह हमें सिखाता है, कि हम अपने तरीके से जीवन जीने के लिए अपने लगाव को त्यागें, और इसके बजाय उसे अपने जीवन

के केंद्र में रखें और खुद को यीशु मसीह और सुसमाचार की सेवा में समर्पित करें, यह स्वीकार करते हुए कि दुख हमारे समर्पण के साथ आएगा। हमारे जीवन को "खोने" के इस कार्य में, हम इसे बचाएंगे।

यीशु ने गेथसेमेनी के बगीचे में प्रार्थना की
गथसेमेन के बगीचे में, यीशु ने प्रसिद्ध प्रार्थना की,

पिता, यदि आप राजी हैं, तो यह प्याला मुझसे ले लो, लेकिन मेरी इच्छा नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो। स्वर्ग के एक दूत ने उसे दर्शन दिए और उसे मजबूत किया। और पीड़ा में होने के कारण , उसने और अधिक ईमानदारी से प्रार्थना की...।

(लुका २२:४२-४४)
इब्रानी के लेखक इस तरह कहानी की व्याख्या करते हैं:

यीशु ने ज़ोर से रोने और आँसू के साथ प्रार्थना की, जो उसे मौत से बचाने में सक्षम था, और उसके भक्ति के कारण उसे सुना गया था।

(इब्रानी ५:७)
इसका क्या मतलब है? चूँकि हम जानते हैं कि यीशु ने गेतसेमनी के बगीचे से क्रुश पर, जाते है , यीशु की प्रार्थनाएँ किस अर्थ में सुनी थीं? वह अपने पुनरुत्थान से पहले, कम से कम क क्रुश के दर्दनाक मौत से नहीं बचा था। यीशु, जो सबसे अधिक विश्वास से भरा और आज्ञाकारी था, जो सदा के लिये जीवित है , जो परमेश्वर का पुत्र भी था, उसे दुख और मृत्यु ने भी नहीं बख्शा , भले ही उसने प्रार्थना में उद्धार के लिए अपने प्रार्थना को पूरा किया। क्यों नहीं?

उसे बख्शा नहीं गया, क्योंकि मसीह यीशु को बचाना मृत्यु से परमेश्वर की इच्छा नहीं थी। पर परमेश्वर की यह इच्छा थी की दुनिया को बचाने के लिए बेटे यीशु को मरने के लिए चुना। यीशु को कष्ट से बचाने के लिए यह अधिक महत्वपूर्ण था।

यीशु ने, पिता की आज्ञाकारिता में, इस तथ्य को स्वीकार किया। उसने परमेश्वर की इच्छा को प्रस्तुत किया। और, इसलिए, परमेश्वर द्वारा "उसे सुना गया था"। अपने दुःखो के समय में, उसने परमेश्वर के मिशन को पुरा करने का आदेश प्राप्त किया कि उसे अपने बुलावे को पूरा करने के लिए क्या करना चाहिए। यीशु की पीड़ा भरी प्रार्थना व्यर्थ नहीं थी। हालाँकि उनकी पीड़ा से मुक्ति पाने की प्रार्थना को अनुमति नहीं दी गई थी, फिर भी उसने अपने दुख का सामना करने के लिए शक्ति प्राप्त की।

हम उसकी महिमा में साझा करेंगे

जब यह जीवन समाप्त हो जाता है, और हमारे सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं, तो हम मसीह के साथ परमेश्वर के उद्धार की पूर्णता प्राप्त करेंगे। हम सभी देखते हैं कि हम वास्तव में परमेश की संतान है , परमेश्वर की आत्मा के नेतृत्व में। यह हमारा गौरव और महिमा का क्षण होगा।

जैसा कि संत पौलुस विश्वास के साथ सकते हैं:

क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।
(रोमी ८:१८, NIV)
हम इस महिमा के लायक नहीं हैं, न ही हम खुद को महिमामंडित कर सकते हैं। बल्कि, हमारी महिमा परमेश्वर की महिमा से प्रकट होती है जो हम में प्रकट होती है। अनुगृह से पिता ने हमें अपना संतान बना लिए। उसने हमें यीशु मसीह में अपना विश्वास रखने की क्षमता दी। उसने हमें अपने क्रुश को रोजाना उठाने में सक्षम बनाया। उसकी आत्मा ने हमें सिखाया, हमें सशक्त बनाया और हमारा नेतृत्व किया। और उसकी अनुगृह से, उसने हमें यह कहने में सक्षम किया, हाँ परमेश्वर के लिए, मसीह यीशु के लिए, और हाँ मसीह के दुख में साझा करने के लिए। हमारे जीवन में परमेश्वर के प्रेमपूर्ण कार्य के द्वारा,

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सभी महिमावान हैं, और इसलिए हम हैं। इसलिये संत पोलुस कहता है ,यह महत्वपूर्ण विषय मे आज के संदेश का सारांश हैं।इसे रुक रुक कर कई बार पढे

२९ क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।
३० फिर जिन्हें उस ने पहिले से ठहराया, उन्हें बुलाया भी, और जिन्हें बुलाया, उन्हें धर्मी भी ठहराया है, और जिन्हें धर्मी ठहराया, उन्हें महिमा भी दी है॥३१ सो हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?
३२ जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिये दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?
(रोमी ८:२९-३२)

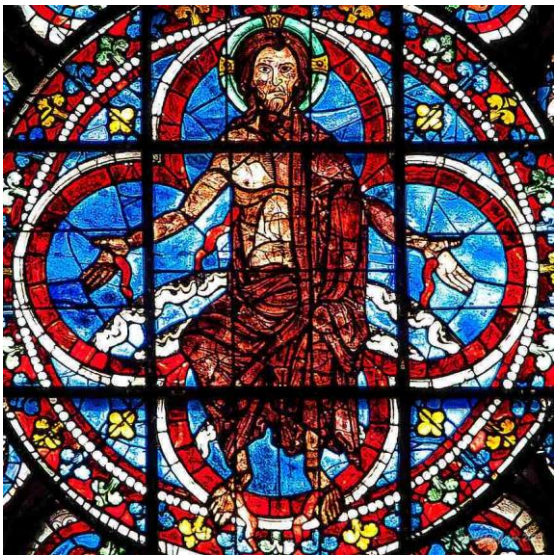

आध्यात्मिक उपयोग

चार्ट्रेस कैथेड्रल के पश्चिम में गुलाब की खिड़की में, हम स्वर्ग में न्याय के सिंहासन पर बैठे मसीह की ओर देखते हैं। हम क्या देखते हैं? एक गौरवशाली शरीर कैसा दिखता है? यदि हम ध्यान से देखें, तो हम उसके नाज़ुक-छेदे हुए हाथों और उसके शरीर मे बरछी से बेधे निशान को देखेंगे, और सभी घावों से लोहू बहेगा। किसी तरह से हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते हैं, मसीह का लहू उन लोगों के लिए दुनिया के पापों को ढांपा करता है, जिन्होंने उस पर विश्वास किया है। हम निंदा के लायक हैं, लेकिन हमें माफ कर दिया जाएगा। हम सजा की उम्मीद करते हैं, लेकिन हमारे न्यायाधीश हमें आत्म-त्याग करने वाले उद्धारकर्ता के रूप में बधाई देंगे।

ऊपर चित्रित कांच की खिड़की पर फिर से देखें। यीशु की हथेलियाँ खुली हैं, जिससे पता चलता है कि वह आपका स्वागत करने के लिए स्वर्ग में होगा। उसके घाव आपको आश्वस्त करते हैं कि उसने आपके पापों की कीमत चुकाई है। तुम पीता के प्यारे हो। आप उसके अनमोल पुत्र, यीशु मसीह की छवि के अनुरूप हो रहे हैं। आप वास्तव में परमेश्वर के एक संतान हैं, जिसमें पवित्र आत्मा अब काम कर रहा है और जीवन भर आपको नेतृत्व, मार्गदर्शन, आराम, और मजबूत करता रहेगा। फिर, एक दिन, जब आप स्वर्ग में पहुंचेंगे, तो आप मसीह की महिमा में हिस्सा लेंगे।

हमारे विश्वास के लिए हममें से कोई भी पीड़ित नहीं होना चाहता। लेकिन अगर यीशु का ईमानदारी से पालन करने का मतलब है कि उसके कष्टों में हिस्सा लेना, तो आप क्या चुनेंगे? यीशु मसीह, सच्चाई और जीवन के मार्ग है। वह आपका परमेश्वर और उद्धारकर्ता है इब्रियों के लेखक को यह बात समझ में आती है:

इसलिए जब गवाहों का ऐसा घना बादल हमें घेरे हुए है, तो आओ हम हरेक बोझ को और उस पाप को जो आसानी से हमें उलझा सकता है, उतार फेंकें1 और उस दौड़ में जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ते रहें और यीशु पर नज़र टिकाए रहें जो हमारे विश्वास का खास अगुवा और इसे परिपूर्ण करनेवाला है।
इब्रानी १२-१-२

परमेश्वर आपको आपके भय और आपके कष्टों का सामना करने के लिए, अनुगृह शक्ति प्रदान करे और विश्वास के मार्ग पर चलने के लिए और आपके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए आज आपको वह अनुग्रह और शक्ति प्रदान करता है जो आपको चाहिए।

PHOTOS from Chartres Cathedral ©JILL K H GEOFFRION, HTTP://WWW.JILLGEOFFRION.COM

Copyright © 2020 Timothy C. Geoffrion, Wayzata, Minnesota. All rights reserved to the author, but readers may freely download, print, forward, or distribute to others, providing that this copyright notice is included.